Knowledgeable Research (An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal) **ISSN 2583-6633**
Available Online: http://knowledgeableresearch.com Vol.04, No.07, July,2025

वैदिक संस्कारो की अवधारणा स्वरूप एवं महत्त्व

*मुकेश कुमार
शोधच्छात्र
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

****

शोधसार :*वेद शब्द ज्ञानार्थक विद् धातु से घञ् प्रत्यय करने पर निष्पन्न होता है। अतः वेद शब्द का सामान्य अर्थ होता है ज्ञान की राशि या ज्ञान का संग्रह ग्रंथ प्राचीन ऋषियों ने जो अपनी दृष्टि से प्राप्त किया उसी को वेदों में संग्रहीत किया गया। विद्यन्ते ज्ञायन्ते लभ्यन्ते एभिर्धर्मादि-पुरूषार्था इति वेदाः[1] आचार्य सायण ने वेद शब्द की अन्य व्याख्या की है- इष्ट प्राप्त्यनिष्ट परिहारयोर लौकिकम् उपायं यो ग्रन्थो वेदयति स वेदः, श्रुति, निगम, आगम, त्रयी, छन्दस, आम्नाय, स्वाध्याय आदि शब्दों का प्रयोग वेदों के अर्थ में किया जाता है।*

शब्दबिन्दु :- *वेद, वैदिक साहित्य, संस्कार, मनुस्मृति, शतपथ ब्राह्मण, अभिज्ञानशाकुन्तलम् ।*

****

वेदोऽखिलो धर्ममूलम्-
यः कश्चिद कस्यचिद् धर्मो मनुना परिकीर्तितः।
स सर्वोऽभिहितो वेदे, सर्वज्ञान मयो हि सः।। [2]

शतपथ ब्राह्मण में चारों वेदों के अध्ययन को अनन्त पुण्य बताया गया है -

यावन्त ह वा इमां पृथिवीं वित्तेम पूर्णां ददत् लोकं जयति, त्रिस्तावन्तं जयति, भूयांसं चाक्षम्यम्, य एवं विद्वान अहरहः स्वाध्यायमधीते। तस्मात् स्वाध्यायोऽध्येतव्यः[3]।

संस्कारो का अर्थ एवं स्वरूप

किसी भी शब्द के प्राथमिक अर्थ ज्ञान के लिये सामान्यतः व्याकरण शास्त्र के अनुसार धातु प्रत्यय आदि का विचार करना आवयश्यक है। उसी प्रकार सम् उपसर्ग पूर्वक कृ धातु से घञ प्रत्यय करने पर संस्कार अर्थ निष्पन्न होता है। कुछ शास्त्रो में भिन्न-भिन्न अर्थो में संरकार शब्द का प्रयोग हुआ है। **प्रोक्षणादि जन्य संस्कारों यज्ञांगपुरोडाशेष्विति द्रव्यधर्मः।**[4] न्याय शास्त्र में आचार्यों ने भावो को व्यक्त करने के लिये आत्मव्यंजंक शक्ति को संस्कार मानते जिसका परिगणन वैशेषिक दर्शन में 24 गुणों के अन्तर्गत किया जाता है। संस्कृत साहित्य में शुद्धि के अर्थ में संस्कार शब्द का प्रयोग महाकवि कालिदास ने अपने कुमारसम्भव नामक ग्रन्थ में किया है

संस्कारवत्येव गिरामनीषी तयास पूतश्च विभूतिश्च।[5]

अभिज्ञानशाकुन्तलम् में कहा गया है-

स्वभावं सुन्दरं वस्तु न संस्कारमपेक्षते।[6]

मनुस्मृति में कहा गया है कि शरीर को पावन बनाने के लिए धार्मिक अनुष्ठान की विधि ही संस्कार है

कार्यः शरीर संस्कारः पावनः प्रेत्य चेह यः।[7]

अतः संस्कार का अर्थ यह है कि मनुष्य जीवन को गर्भधारण से लेकर मृत्यु पर्यन्त धार्मिक अनुष्ठानों द्वारा सुसज्जित करना ही संस्कार है विवाह, अग्न्याधान आदि संस्कारो द्वारा हीनाङग पूर्ति होती है-

गार्भहमैजातकर्म चौडमौंजीनिबन्धनैः।
वैजिकं गार्भिकं चैनो द्विजानाममृज्यते।।

---

[1] शबरभाष्य, जैमिनि-मीमांसासूत्र 1.1.1

[2] मनुस्मृति-2/7

[3] तैत्तिरीय आरण्यक 2.15.1–3

[4] पं. रघुनाथ शर्मा सम्पादित, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, पृ. 31

[5] मीमांसा परिभाषा, पं. रघुनाथ शर्मा, चौखम्बा संस्कृत सीरीज़, पृ. 32

[6] अभिज्ञानशाकुन्तलम् के सातवें अंक में 23वें श्लोक

[7] मनुस्मृति 2.26–27

वैदिकैः कर्मभिः पुण्यैः निषेकादि द्विजन्मनाम्।
कार्यः शरीर संस्कारः पावनः प्रेत्य चेह च।।[8]

आज सभी मानव अपने को पूर्ण बनाने की अभिलाषा रखते हैं। इन्ही संस्कारों के गुणों से ही मानव अपने जीवन को पूर्ण करता है तथा इस लोक में सुख शान्ति का अनुभव करते हुए शान्ति से परलोक सुख का भी आनन्द लेता है।

आचार्य शंख लिखते हैं संस्कारो से संस्कृत आठ आत्मगुणों से युक्त व्यक्ति ब्रह्मलोक में पहुंचकर ब्रह्मपद को प्राप्त कर लेता है। जिससे वह कभी गिरता नही है।

संस्कारैः संस्कृतः पूर्वैरूत्तरैनुसंस्कृतः।
नित्यमष्ट गुणैर्युक्तो ब्राह्मणो ब्राह्मलौकिकः।
ब्राह्मं पदमवाप्नोति यस्मान्नच्यवते पुनः।[9]

संस्कारों के संख्या-

संस्कारों की संख्या के विषय में भिन्न-भिन्न शास्त्रों में भिन्न भिन्न मत देखे जाते हैं- आश्वलायन गृहसूत्र ऋग्वेद से सम्बन्धित है, जिसमें संस्कारो, कृषिकर्मों एवं पितृमेध आदि धार्मिक कृत्यों का प्रधान रूप से वर्णन मिलता है इसमें 11 संस्कारों का वर्णन मिलता हैं। विवाह, गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोनयन, जातकर्म, नामकरण, चूडाकरण, अन्नप्राशन, उपनयन, समावर्तन, अन्त्येष्टि । आचार्य अङ्गिरा के अनुसार संस्कारो की संख्या 25 होनी चाहिए

गर्भाधानं पुंसवनं सीमन्तो बलिरेव च।
जातकृत्यं नामकर्म निष्क्रमो न्नाषनं परम्।।
चौलकर्मोपनयनं तद्वतानां चतुष्टयम्।
स्नानोद्वाहो चाग्रयणमष्टकाष्च यथाषथम्।।
श्रावण्यामाष्युज्यां च मार्गषीर्ष्या च पार्वणम्।
उत्सर्गश्चाप्युपाकर्म महायज्ञाष्च नित्यषः।।
संस्कारा नियता होते ब्राह्मणस्य विशेषतः।
पंचविंशति संस्कारैः संस्कृता ये द्विजायतः।[10]

संस्कारों की संख्या के क्रम में 11, 13, 25, 40 आदि संख्या गृहसूत्र, धर्मसूत्र, स्मृतिग्रन्थों के आधार पर हमने निर्धारित की-

महर्षि व्यास के अनुसार संस्कार मुख्य रूप से सोलह हैं - इस प्रकार वैदिक संस्कृति में षोडश संस्कारो का ही वर्णन प्राप्त होता है।

1. गर्भाधान संस्कार	**2. पुसंवन संस्कार**
3. सीमन्तोनयन संस्कार	**4. जातकर्म संस्कार**
5. नामकरण संस्कार	**6. निष्क्रमण संस्कार**
7. अन्नप्राशन संस्कार	**8. चूडाकर्म संस्कार**
9. कर्णवेध संस्कार	**10. उपनयन संस्कार**
11. वेदारम्भ संस्कार	**12. समावर्तन संस्कार**
13. विवाह संस्कार	**14. वानप्रस्थ संस्कार**
15. सन्यास संस्कार	**16. अन्त्येष्टि संस्कार**

गर्भाधान संस्कार :- गृह्यसूत्र गर्भाधान के साथ ही संस्कारों का प्रारम्भ करते हैं।

निषिक्तो यत्प्रयोगेण गर्भः संधार्यते स्त्रियां तद्गर्भालम्भनमनाम् कर्म प्रोक्तं मनीषिभिः।[11]

स्त्री पुरुष के संयोग रूप इस संस्कार की विस्तृत विवेचना शास्त्रों में मिलती है। दिव्य सन्तति की प्राप्ति के लिये बताए गये शास्त्रीय प्रयोग सफल होते हैं।

पुंसवन संस्कार :- गर्भधारण का निश्चय हो जाने के पश्चात पुंसवन नामक संस्कार के द्वारा अभिषिक्त किया जाता है। इसका अभिप्राय पुं-पुमान (पुरुष) का सवन (जन्म हो)।

सीमन्तोनयन संस्कार :- इस संस्कार में गर्भिणी स्त्री के केशों को ऊपर करना

[8] वीरमित्रोदय (संस्काराधिकार), संपादक पं. श्रीराम शर्मा, चौखम्बा संस्कृत सीरीज़, वाराणसी, पृष्ठ संख्या लगभग 3–4

[9] शङ्खस्मृति वीरमित्रोदय, संस्काराधिकार, पृ. 3-4

[10] अङ्गिरा स्मृति में

[11] वीरमित्रोदय - संस्काराधिकार, चौखम्बा संस्कृत सीरीज़ (वाराणसी) पृष्ठ 7–8

सीमन्तं उन्नीयते यस्मिन कर्मणि तत् सीमन्तोन्नयनम्[12]

किसी पुरूष नक्षत्र में चन्द्रमा की स्थिति में होने पर स्त्री पुरूष को उस दिन फलाहार करके इस विधि को सम्पन्न किया जाता है। पत्नी अग्नि के पश्चिम आसन पर आसीन होती है पति गूलर के कच्चे फलो का गुच्छ, कुशा, साही के कांटे लेकर उससे पत्नी के केश संवारता है।

जातकर्म संस्कार :- पिता स्वर्णशलाका या अपनी अनामिका से जातक को जीभ पर मधु या घृत महाव्याहृतियों के उच्चारण के साथ चटावे। गायत्री मंत्र के उच्चारण के साथ घृतबिन्दु छोडा जाए। इस अवसर पर लग्नपत्र बनाने और व्यातक के गृह नक्षत्रों को प्राप्त करना और उसके अनुसार बच्चे के भावी संस्कारों का भी निश्चय किया जाता है।

जातं कुमारं स्वं दृष्टवा स्नात्वाऽनीय गुरुम् पिता।
नान्दी श्राद्धावसाने तु जातकर्म समाचरेत ।।[13]

नामकरण संस्कार ब्रहस्पति के वचन से प्रमाणित है कि व्यक्ति संज्ञा का जीवन में सर्वोपरि महत्व है, नामकरण संस्कार हिन्दू जीवन में बडा महत्व रखता है। प्रायः बालकों के नाम सम अक्षरों में लिखना चाहिए।

याज्ञिकाः पठन्ति दशम्युत्तकालं जातस्य नाम विदध्यात् घोष वदाद्यन्तरतस्थवृद्ध त्रिपुरुषानुक्रम नरिप्रतिष्ठितम् । तद्धि प्रतिष्ठितम् भवति। द्वक्षर चतुरक्षरं वा नाम कुर्यात न तद्धितम् इति

गृहसूत्रों के सामान्य नियम के अनुसार नामकरण संस्कार शिशु के जन्म के पश्चात दशवें व बारहवें दिन करना चाहिए। बालिकाओं के नाम विषमाक्षर में किए जाए वे आकारान्त या ईकारान्त हों। उच्चारण में सुखकर, सरल, मनोहर, मंगलसूचक, आशीर्वादात्मक होने चाहिए।

निष्क्रमण संस्कार :- प्रथम बार शिशु के सूर्य दर्शन कराने निष्क्रमण कहा गया है। भलीभांति अलंकृत बालक को माता गोद में लेकर बाहर आए कुलदेवता के समक्ष देवार्चन करे-

अन्न प्राशन संस्कार :- माता के दूध से पोषित होने वाले बालक को प्रथम बार अन्न प्राशन प्रायः प्राचीन काल से ही है। अन्नप्राशन के दिन सर्वप्रथम यज्ञीय भोजन के पदार्थ वैदिक मंत्रो के उच्चारण के साथ पकाये जाएं। गणेशार्चन करके सम्बन्धित ऋचाओं से हवन करके बालक को मंत्र पाठ के साथ अन्नप्राशन कराया जाए।

चूडाकरण (मुण्डन) संस्कार :- चूडाकरण अथवा मुण्डन संस्कार अनेक कुलों में मनौती के आधार पर किये जाते हैं, किन्तु मुहूर्त निर्णय में सभी ज्योतिष का आधार ग्रहण करते हैं।

मुण्डन संस्कार :- में शिखा धारण की व्यवस्था का प्रायः उच्चाटन होता जा रहा है। सुश्रुत के अनुसार मष्तक के भीतर ऊपर की ओर सिरा तथा संधि का सन्निपात है। वही रोमावर्त का अधिपति है, शिखा रखने से कोमलांग की रक्षा होती है।

कर्णवेध संस्कार :- आभूषण पहनने के लिये विभिन्न अंगो के छेदन की प्रथा सम्पूर्ण संसार में प्रचलित है। कात्यायन सूत्रों में इसका सर्वप्रथम उल्लेख मिलता है, जीवन के आरम्भ में ही इस क्रिया को वैद्य द्वारा सम्पादित किया जाना चाहिए। कर्णवेध षष्ठ तथा सप्तम मारा में करना चाहिए भद्रंकर्णेभि आदि मंत्रों का उच्चारण किया जाना चाहिए।

विद्यारम्भ एवं अक्षरारम्भ संस्कार :- उत्तरायण सूर्य का होने पर ही गणेश, सरस्वती, गृह देवता, का अर्चन करके गुरू के द्वारा अक्षरारम्भ कराया जाए। प्राचीन काव्य नाटको में इस संस्कार का उल्लेख पाया जाता है, उत्तररामचरितम्, रघुवंश तथा कोटिल्य के अर्थ शास्त्र में इसकी चर्चा पायी जाती है।

उपनयन संस्कार :- भारतीय मनीषियों ने जीवन के समग्र रचना के लिये जिस आश्रम व्यवस्था की स्थापना की, जिससे मनुष्य को सहज ही पुरुषार्थ चतुष्टय प्राप्त हो। बहुसंख्य परिवारों में विवाह से पूर्व उपनयन संस्कार को कराकर वैवाहिक संस्कार कर दिया जाता है। जबकि गृह सूत्रों में विभिन्न वर्णों की आयु सीमा का निर्धारण किया जाता है -

ब्रह्मवर्चसकामस्य कार्य विप्रस्य पदद्रचमे।
राज्ञो वलर्थिनः षष्ठे वैश्यस्येहार्थिनोऽष्टमे।। [14]

[12] वीर मित्रोदय चौखम्बा संस्कृत पृष्ठ 10–11

[13] वीरमित्रोदय (संस्काराधिकार) मित्रमिश्र पृष्ठ १२-१३

[14] मनुस्मृति-2.37

वेदारम्भ संस्कार वेदा रम्भ का अर्थ है कि वेदाध्ययन के आरम्भ करने का संस्कार। इस संस्कार के बाद बालक को कहा जाता है कि आज से तुम ब्रह्मचारी हो। आचार्य के अधीन रहकर वेदाभ्यास करना, आज्ञा का उल्लंघन न करना। वैदिक संस्कृति में आचार्य का कार्य केवल विद्या देना ही नही अपितु सदाचारी व्यक्ति तैयार करना भी था।

समावर्तन संस्कार :- ब्रहाचारी व्रत, सांगोपांग वेदविद्या, उत्तम शिक्षा और पदार्थ विज्ञान को पूर्ण रूप से प्राप्त करके विवाह विधान पूर्वक गृहस्थाश्रम को ग्रहण करने के लिये विद्यालय को छोडकर घर की ओर आना।

विवाह संस्कार :- विवाह संस्कार मानव जीवन का एक आवश्यक एवं अपरिहार्य सस्कार है। समाज निर्माण की यह एक आधार शिला है। वैवाहिक जीवन के बिना समाज की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। शास्त्रों में अविवाहित व्यक्ति को अयज्ञीय कहा गया है। गृहस्थाश्रम सभी आश्रमों का आश्रय है, जैसे वायु प्राणिमात्र के जीवन का आश्रय है। स्मृतियों में विवाहों को आठ भागों में विभक्त किया गया है-

1. ब्रह्म विवाह
2. दैव विवाह
3. आर्ष विवाह
4. प्रजापत्य विवाह
5. आसुर विवाह
6. गान्धर्व विवाह
7. राक्षस विवाह
8. पैशाच विवाह

वानप्रस्थ संस्कार :- विवाह से सन्तानोत्पत्ति करके पूर्ण ब्रहाचर्य से पुत्र-पुत्री का विवाह करें और जब पुत्र का पुत्र हो जाये तब पुरूष वन में जाकर तप और स्वाधाय का जीवन व्यतीत करें। गृहस्थ लोग जब अपनी देह का चमडा ढीला हो जाए और श्वेत केश होते हुए देखे तो वन का आश्रय लेवें। वानप्रस्थाश्रम करने का समय 50 वर्ष के उपरान्त हो।

सन्यास संस्कार :- सन्यास का अर्थ है स न्यास अर्थात अब तक जो लगाव का बोझ उसके कंधो पर लगा हुआ है उसे अलग घर देना। सन्यास संस्कार में महादि आवरण पक्षपात छोडकर विरक्त होकर सब पृथ्वी में परोपकार्थ विचरण करें। अपनी आत्मा को वेदोक्त परमात्मा की आज्ञा में समर्पित करके परमानन्द परमेश्वर के सुख को जीता हुआ भोगकर व शरीर छोडकर सर्वानन्दयुक्त मोक्ष को प्राप्त होना ये सन्यासियों के मुख्य कर्म हैं।

अन्त्येष्टि संस्कार :- हिन्दू जीवन के संस्कारों में अन्त्येष्टि ऐहिक जीवन का अन्तिम अध्याय है। आत्मा की अमरता एवं लोक परलोक का विश्वासी हिन्दू जीवन इसलोक की अपेक्षा पारलौकिक कल्याण की सतत् कामना करता है। मरणोत्तर संस्कार से ही पारलौकिक विजय प्राप्त होती है।

जात संस्कारेणेमं लोकमभिजयति।
मृतसंस्कारेणामुं लोकम्।। [15]

अन्त्येष्टि संस्कार से सम्बन्धित अनेक विधि विधानो का सविस्तार वर्णन हमारे ऋषियों ने प्रस्तुत किया है। शरीर पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश इन पांच भूतों का बना है इसलिये मृत्यु के उपरान्त शरीर इन पंचमहाभूतों को शीघ्रातिशीघ्र सूक्ष्म करके अपने मूल रूप में पहुंचा देना ही वैदिक पद्धति है।

वैदिक संस्कारो का महत्त्व

व्यक्तित्त्व के निर्माण एवं विकास हेतु आचार्य अङ्गिरा व्यवितत्त्व के निर्माण में संस्कारों की भूमिका को स्वीकारते हुए चित्रकर्म का सुन्दर दृष्टान्त देते हुए कहते हैं। सनातन धर्म में व्यक्तित्व एवं चरित्र के निर्माण को मात्र प्रकृति, नियति एवं काल के वशीभूत न छोडते हुए उसके विवके पूर्ण विकास की एक सुचिन्तित सुव्यवस्थित, सुनियोजित एवं परिणाम दायिनी व्यवस्था की परिकल्पना की गयी। शुभत्व हेतु जीवन में शुभता आए इसके लिये संरकारों की महती आवश्यकता है। इसलिये शुभत्व का आधान में संस्कारों का प्रमुख प्रयोजन रहा है। सकारात्मकता का भाव उत्पन्न होना ही शुभता है। जीवन में शुभत्व, समृद्धि एवं मंगल का प्रवेश हो इसके लिये संस्कारों के अनुष्ठान में ग्रहों, देवताओं, दिक्पालों, पन्च महाभूतों आदि का आवाहन एवं यथायोग्य पूजन अर्चन आदि किया जाता है।

वैदिकैः कर्मभिः पुण्यर्निषेकादिर्दिवजन्मनाम्।
कार्य शरीर संस्कारः पावनः प्रेत्य चेह च्।।
गार्भेहर्होमैर्जातकर्मचौलमौन्जीनिबन्धनैः।
बैजिकं गार्भिकं चैनं द्विजानामपमृज्यते।। [16]

[15] वीर मित्रोदय

[16] मनुस्मृति 2/26-27

परम पुरूषार्थ की प्राप्ति हेतु मनुष्य जीवन का अन्तिम उद्देश्य परम-पुरुषार्थ मोक्ष ही है। जो सनातन विचार धारा को अन्य सभी परम्परावादी विचार धाराओं से पृथक एवं सिरमौर बनाता है। मनु महाराज के अनुसार स्वाध्याय, व्रत, होम, देव व ऋषियों के तर्पण, यज्ञ सन्तानोत्पत्ति तथा पन्च महायज्ञों के अनुष्ठान से यह शरीर ब्रह्म के साक्षात्कार योग्य हो जाता है।

स्वाध्यायेन जपैर्होमैस्त्रैविधेनेज्यया सुतैः।
महायज्ञैश्च यज्ञैश्च ब्राह्मीयं क्रियते तनुः।। [17]

अतः उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि संस्कार द्वारा मनुष्य का विकास एवं निर्माण हो सकता है। मानव की शारीरिक मानसिक एवं आत्मिक उन्नति के लिये जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त विभिन्न अवस्थाओं के अनुकूल संस्कारों की व्यवस्था वेद के मनीषी एवं कर्मकाण्ड के मर्मज्ञ ऋषियों ने बहुत ही सुन्दर ढंग से की है। अतः जीवन निर्माण के लिये हमें संस्कारों को अपनाना चाहिए।

निष्कर्ष

वैदिक संस्कार भारतीय संस्कृति के मौलिक सिद्धांत हैं, जिनका उद्देश्य मानव जीवन को शुद्ध, सुसंस्कारित और उद्देश्यपूर्ण बनाना है। "संस्कार" शब्द स्वयं साफ़ करवाने, पवित्र करने और समृद्धि की दिशा में है। जन्म से मृत्यु तक जीवन के हर महत्वपूर्ण चरण पर १६ संस्कार किए जाते हैं, जो धार्मिक अभ्यास के रूप में नहीं, बल्कि व्यक्ति की मानसिक, नैतिक और आध्यात्मिक उन्नति के लिए हैं। इन संस्कारों का सूचना जीवन के सभी आश्रम और पुरुषार्थों से गहरा राब्ता है। गर्भाधान, नामकरण, विद्यारंभ, उपनयन, विवाह आदि संस्कार जीवन की क्रमबद्ध प्रगति में मर्मगत सहायक हैं। ऋषियों ने इनकी विधि इस प्रकार बनाई कि व्यक्ति केवल भौतिक अस्तित्व की सीमा से नहीं रहे, बल्कि आत्मिक और सामाजिक जागरूकता से जुड़े। संस्कारों के जरिए समाज में अनुशासन, सहिष्णुता और साहयता की भावना बढ़ती है। वे संस्कृति के संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण हैं और नई पीढ़ी को सिखाते हैं कि जीवन का उद्देश्य केवल भौतिक नहीं, बल्कि आध्यात्मिक विकास की दिशा में भी होना चाहिए। इस प्रकार, वैदिक संस्कार भारतीय जीवन-दर्शन की अनमोल विरासत हैं जो व्यक्ति और समाज-दोनों के लिए सामर्थ्यपूर्ण, उच्च और संतुलित जीवन की दिशा में सहायक होते हैं।"

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका महर्षि दयानन्द सरस्वती दिल्ली। आर्य साहित्य प्रचार ट्रस्ट
2. वीर मित्रोदय - पं० विष्णुदत्त शर्मा चौखम्भा प्रकाशन वाराणसी
3. हिन्दू संस्कार - राजबली पाण्डेय मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली।
4. मनुस्मृति पं०- गिरिजा प्रसाद द्विवेदी नवल किशोर प्रेस लखनऊ।
5. पारस्कर गृहसूत्र - आचार्य पारस्कर चौखम्भा संस्कृत संस्थाना वाराणसी ।
6. याज्ञवल्क्य स्मृति- आचार्य याज्ञवल्क्य श्रीकृष्णदास मुम्बई ।
7. संस्कारों की पुण्य परम्परा आचार्य श्रीराम शर्मा गायत्री तपोभूमि मथुरा।
8. वैदिक सूक्ति संग्रह- डॉ० गंगासहांय प्रेमी हरीश प्रकाशन मन्दिर आगरा।
9. वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- डॉ० कपिल देव द्विवेदी विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी।
10. वैदिक साहित्य और संस्कृति- आचार्य बलदेव उपाध्याय शारदा संस्थान वाराणसी।
11. अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी रामनारायन लाल विजयकुमार इलाहाबाद
12. कुमारसम्भव- पं० प्रद्युम्न पाण्डेय चौखम्भा वाराणसी।

*Corresponding Author: Mukesh Kumar
E-mail: mukeshk05033@gmail.com
Received: 06 June,2025; Accepted: 27July 2025. Available online: 30 July, 2025
Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension)
This work is licensed under a Creative Commons Attribution-Noncommercial 4.0 International License

[17] मनुस्मृति 2/28